बाप नें बच्चों को अपना परिचय दिया। सबको तो नही देंगें। फिर बच्चों को बाप का परिचय देना है। बाप का परिचय कोई डिफीकल्ट नही है। उनका नाम ही है परमात्मा शिव। गाया भी जाता है शिव परमात्मा नमः शंकर परमात्मा नमः वो विष्णु परमात्मायें नमः नही कहा जाता। शिव परमात्मायें नमः कहा जाता है। तो परमपिता शिव नमः हो गया। पिता अक्षर डालनें से बच्चे तो है ही सब एक बाप के। यह हुआ परिचय फिर समझाना चाहिये बाप नई दुनिया रचते है। उसमें होता है लक्ष्मी नारायण का राज्य। बाप आकर राजयोग सिखाते है। क्योंकि भारत में जब जन्म लेते है तो बाप नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश कराते है। राजयोग शिव परमात्मा ही सिखाते है। भगवान एक ही है। वो निराकार है। कृष्ण मनुष्य है। जरूर श्रीकृष्ण की आत्मा नें आगे जन्म में बाप से राजयोग सीख वर्सा पाया होगा। नोट करना चाहिये और फिर ऐसे ही लिखाना चाहिये। अब वो ही समय है नां। महाभारत का समय है। बाप राजयोग सिखा रहे है ब्रह्मा दवारा। ब्रह्मा मुखवंशावली जरूर शुरू में होते चाहिये। पहले ब्राह्मण फिर है देवतायें। यह सब ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ कहलाते है। अब राज्य भाग दे रहे है तब तो हम कहते है नां। अच्छी रीती बाप और रचना का परिचय देना है। बाप का परिचय बच्चे ही दे सकते है। ऐसे-2 विचार सागर मंथन कर युक्तियाँ रचनी होती है। बाप का परिचय जरूर देना है। है भी सब का बाप, ब्राह्मण ही बाप का परिचय दे सकते है। ब्रह्मा है एक शिव बाबा का बच्चा। प्रजापिता तो यहाँ है नां। ब्रह्मा दवारा ही रचना रचते है। प्रजापिता भी ब्रह्मा को ही कहा जाता है। विष्णु वो शंकर को प्रजापिता नही कहा जाता तो ऐसे -2 समझाना चाहिये। मन्दिरों में गंगा घाट पर भी समझा सकते है। सदगती दाता सर्व का एक ही बाप है। यह सब पुआइन्टस बुधी में धारण करो। नोट रखने अच्छे है। पक्के-2 याद कर देना चाहिये तो समझानें में भी सहज होगा। घड़ी-2 स्मरण भी होगा तो बहुत खुशि होगी। सर्विस किया तो उन्नती को पा नही सकते। बहुतों का आप समान बनानें से मर्तबा ऊंच होगा। पास विथ आनर होना चाहिये। ओम

23-1-1967: रात्री क्लास:—भगवान को बाप तो सब समझते है। अंग्रेजी में भी कहते है गाड फादर। अब कोई से पूछा जाये कि गाड फादर को जानते हो? जब कहा जाता है गाड फादर तो जरूर बाप और बाप के वर्से को जानते होंगें। फिर नेती-2 कह ही कैसे सकते है। गाड फादर तो सबका फादर ठहरा नां। वो है रचता नई दुनिया का। नई दुनिया है सतयुग पुरानी दुनिया है नर्क। कितनी सहज बात है। इसको स्वर्ग तो कोई नही कहेंगें। इसको कहा ही जाता है पुरानी दुनिया कलियुग। समझाना चाहिये कि जब गाड फादर कहते हो तो तो सतयुग का वर्सा मिलना चाहिये। जरूर मिला होगा, परन्तु ऐसी सहज बात भी कोई समझ नही सकते। स्वर्ग कब था यह किसीको पता नही पड़ता है। यह भी जानते है लक्ष्मी नारायण स्वर्ग के मालिक थे जरूर। इनको बादशाही बाप से मिली होगी। अच्छा गाड फादर रहते कहाँ है? कहेंगें परमधाम में। तो जरूर तुम बच्चे भी वहाँ के रहनें वाले होंगें। मनुष्यों की आसुरी बुधी होनें कारण ऐसे-2 समझ विचार उनके चलते ही नही है। बाप कितना सहज करके बताते है। अभी तो बच्चों को मालूम हुआ कि क्योंकि हम शिव बाबा का वर्सा ब्रह्मा दवारा ले रहे है। यह जो बैठा हुआ है वो है साधारण तन। प्रजापिता कोई साधारण
****
थोड़े ही होंगे। वो तो ऐसे हुये जैसे कि शिव बाबा। शिव बाबा की सब आत्मायें सन्तान। प्रजापिता ब्रह्मा के भी सब बच्चे। तो साधारण जरूर और है जो प्रजापिता ब्रह्मा नही है। यह साधारण था नां। वो प्रजापिता नही था। पत्थर बुधी होनें कारण कोई समझते नही है। अभी तुम समझते हो क्योंकि भारत स्वर्ग था। जरूर बाप नें उनको वर्सा दिया होगा। शास्त्रों में आयु बड़ी-2 लगा दी है। तुम बच्चे जानते हो यह दादा भी राजयोग सीख रहे है और कृष्ण बननें वाले है। वो ही श्रीकृष्ण की आत्मा 84जन्मों के बाद यह बैठी है। इनको ही कहा जाता है सांवरा गाँव का छोरा। कृष्ण तो हो नही सकते। बाकी उनकी आत्मा तो है नां। गाते भी है सांवरा गाँव का छोरा। कृष्ण को कैसे कह सकते है। वो तो विश्व का मालिक उनको हम किस

हिसाव से कह सकते है गाँव का छोरा मक्खन चुरा कर खाने वाला। अव कितने समझदार वन गये हो। सारे विश्व के आद मध्य अन्त को जान रहे हो। सारी विश्व वुधी मे खड़ी है। सारे झाड़ की आदमध्य अन्त का नालेज वुधी मे है। वाप कहते है मुझे और मेरी रचना को जानने से तुम सारे विश्व के मालिक वन सक्ते हो। मूल वात है आत्मा जो पतित है वो पावन जरूर होनी चाहिये। नालेज तो वड़ी ईस चीप है। उस नालेज मे तो वहुत खर्चा है इसमे कोई खर्चा नही। सिर्फ मेहनत है तो वाप को याद करने मे। पावन जव तक नां वनेंगे तो पावन दुनिया का मालिक कैसे वनेंगे। याद के लिये वावा कितना समझाते है।आगे तुम लौकिक वाप को याद करते थे अव तुम लौकिक के होते पारलौकिक को याद करो। कर सक्ते हो। वेहद के परलौकिक वाप को और कोई नही जानते। वाप सत है चैतन्य है ज्ञान का सागर है। शरीर तो जड़ पांच तत्वों का वना हुआ है। आत्मा तो आत्मा है। किस से वना हुआ है कुछ कह नही सकेंगे? आत्मा तो अनादी अविनाशी है। कितनी छोटी आत्मा भृकुटी के वीच मे रह कर कितना पार्ट वजाती है। यह सव वाते है नई। शास्त्रों मे तो है नही। तुम वच्चों को अपने को आत्मा समझ कर वाप को भी ऐसे ही याद करना है। विन्दी मे कितना ज्ञान है। वीज छोटा होता है नां। सरसों का दाना अथवा खसखस कितनी छोटी होती है। तुम वच्चों को वाप कितना सहज वताते है।वाप कहते है तुम भी आत्मा मै भी आत्मा हूं। मै सुप्रीम हूं। मुझे परम-आत्मा कहते है। और कोई मनुष्य नही जिसकी वुधी मे झाड़ का ज्ञान हो। इसको कहा ही जाता है सहज याद वाप और वर्से की। वेवीज तो नही हो वड़े हो समझते हो। फिर भी माया भुला देतीहै। वाप और वर्से की खुशी मे रहने नही देती है। तुम वच्चे सम्मुख सुनते हो। जैसे वाप नालेज फुल वैसे हीहम भी नालेज फुल। तुम्हारे और वाप मे फर्क ही क्या है? वो वाप की आत्मा नालेज फुल पूर्ण पवित्र है। तुम पवित्र वनने लिये पुरूषार्थ कर रहे हो। अव 84का चक्र पूरा होता है। अव चलना है घर। नाटक पूरा हुआ। तुम इसी खुशी मे रहो तो भी कितना अच्छा है। आपस मे भी यही वाते करते रहो। और वाकी झरमुई झगमुई की वातों मे जाती नही। घर मे तो ऐसा साथ मिल नां सके। वुधी मे आता है यह विचारे वगुले है। कुछनही जानते। जैसे वहुत पढ़ा हुआ मनुष्य एक खेती वाड़ी करने वाले मनुष्य के लिये कहेंगे विचारा...अव तुम समझते हो यह विचारी प्राईमिनिस्टर आद क्या है। पहले नम्वरवाले लन्न. मे भी यह नालेज तो इनमे कैसे हो सकती है।ऐसे-2 अपने साथ वातें करने से वहुत सुख मिलता है।रोमांच खड़े हो जाते है। वाप कहते है मै सव वच्चों को रावण राज्य से, दुख से छुड़ाने आया हूं। वाप आये ही है वच्चों को सुख देने लिये। कितनी खुशी होती है। इनकी आत्मा भी कहती है मुझे भी वहुत खुशी होती है।अकेला वच्चा हूं ब्रहमा। यह सव वर्सा वाप से ले रहे है। मै भी वाप से ले रहा हूं। वावा इनको पढ़ाते है तो मै भी पढ़ता हूं। कितना वण्डर है।अच्छी तरह अन्तर्मुखी हो कर रहे तो कितनी खुशी हो। सम्मुख रहने से रिफ्रैश अच्छे होते है। कहीं भी जावेंगे तो कहेंगे वाप दादा आरहे है जिनसे ही हम वर्से के मालिक वनते है। मोस्ट सिम्पल है। माया के तूफान तो आवेंगे।यह याद स्थाई रहे वो अवस्था अन्त मे होगी। अभी पूरा पुरूषार्थ हुआ नही है।अभी पढ़ना है फिर हम मृत्यु लोक से अमर लोक मे ट्रान्सफर हो जावेंगे। अमर लोक से मृत्युलोक, मृत्यु लोक से अमर लोक यह चक्र है।यह वच्चों को समझ मे रहे तो अतिइन्द्रिय सुख की महसूसता हो। डोज़ ऐसा है जो इसका नशा एकदम चढ़ जाना चाहिये। यह अविनाशी ज्ञान का डोज एक ही जन्म मे मिलता है।इनको रूहानी ज्ञान कहा जाता है। गाया भी जाता है मनुष्य से देवता किये करत नां लागी वार। चढ़ती कला मे कितना थोड़ा समय लगता है। उतरती मे कितना समय लगता है। तमो से सतोप्रधान वनने मे वहुत मेहनत लगती है